भगवान शिव, दिव्य नृत्य के देव

मार्क मॅक्लॉलिन द्वारा लिखित व्याख्या

भगवान शिव कौन हैं? हम भगवान शिव को कैसे जान सकते हैं?

भगवान शिव भारत में अतीव प्रिय तथा गहरे भक्तिभाव से पूजे जाने वाले देव हैं। अपनी लम्बी जटाओं, पशुचर्म पहने, हल्के-से नीलवर्णी शरीर पर लगे भस्म के कारण वे समस्त देवताओं में तुरन्त पहचाने जाते हैं। उनके नाम 'शिव' का अर्थ ही है, 'शुभ', 'मंगलमय', 'कृपालु', 'उपकारक या हितकर' और 'कल्याणकारी'। अकसर उन्हें 'सदाशिव' के नाम से सम्बोधित किया जाता है जिसका अर्थ है, 'वे जो सदैव शुभ हैं'।

सिद्धयोग पथ पर, भगवान शिव का वन्दन व्यक्ति की अन्तरात्मा के रूप में किया जाता है। भगवान शिव, सिद्धयोग के गुरुओं द्वारा प्रदान किए गए दीक्षा-मन्त्र 'ॐ नमः शिवाय' के देवता भी हैं; 'ॐ नमः शिवाय' का अर्थ है, 'मैं शिव को, अपनी आत्मा को नमन करता हूँ।' इस मन्त्र के जप द्वारा हम शान्ति व स्थिरता के स्थान में प्रवेश करते हैं जो कि शिव ही है क्योंकि यह मन्त्र उस बोध का साकाररूप है। यह मन्त्र भगवान शिव का नादरूप है।

भगवान शिव की पूजा, एक देवता के रूप में और परम तत्त्व के रूप में भी की जाती है। शैवशास्त्र व शैवदर्शन [भगवान शिव का सम्मान करने वाली शास्त्रीय परम्पराएँ व दर्शन] उन्हें 'परमशिव' के रूप में सम्बोधित करते हैं। इस रूप में शिव परम चिति हैं जो विश्वात्मक भी है और विश्वोत्तीर्ण भी है अर्थात् वह विश्वाकार बन जाती है और साथ ही इसका अस्तित्व विश्व के परे भी है। भगवान शिव को उस 'तत्त्व' के रूप में जाना जाता है जो समस्त वस्तुओं और जीवों को उत्पन्न करता है। वे सृष्टि व स्थिति का स्रोत हैं और वे वह भी हैं जिसमें अन्ततः सब कुछ विलीन हो जाता है।

भक्तगण और योगीजन भगवान शिव के किसी एक अथवा अनेक रूपों में उनकी आराधना करते हैं। वे आदिगुरु हैं जो मोक्षप्राप्ति और भगवद्ज्ञान-प्राप्ति के मार्ग पर अग्रसर साधकों को मार्गदर्शित करते हैं। श्रीगुरुगीता में उनकी शिष्या, भगवती पार्वती के साथ उनके संवाद में हम उनके उपदेशों का प्राकट्य देखते हैं। आदिगुरु के रूप में उनका अनन्त प्रेम उन आत्मसाक्षात्कारी सद्गुरुओं की परम्पराओं के माध्यम से प्रवाहित होता है जो पारमेश्वरी अनुग्राहिका शक्ति की वर्षा करते हैं।

भगवान शिव ज्योतिर्मय, वैभवशाली महादेव हैं जो ब्रह्माण्ड का संचालन करते हैं। वे महातपस्वी महायोगी हैं जिन्हें गहन ध्यान में लीन दर्शाया जाता है। अपने भयंकर रुद्रावतार में वे, परम सत्य की सीमित समझ में हमें बद्ध करने वाले अज्ञान को दूर करते हैं। उन्हें अपनी अर्धांगिनी, देवी पार्वती

और उनके दोनों पुत्रों, भगवान श्रीगणेश व कार्तिकेय स्वामी के साथ धर्मपरायण गृहस्थ के रूप में भी दर्शाया जाता है। साथ ही, उनका अर्धनारीश्वर स्वरूप भी है जिसमें दोनों रूप एक-साथ समाविष्ट हैं—शिव एवं शक्ति, पुरुष एवं स्त्री, निराकार परब्रह्म की अविचल स्थिरता के रूप में भगवान और इस प्रकट विश्व को आकार देने वाली व इसका भरण-पोषण करने वाली क्रियाशील शक्तिरूपा भगवती।

भगवान शिव करुणामय 'आशुतोष' हैं जिसका अर्थ है, 'वे जो सहज ही प्रसन्न हो जाते हैं।' और वे 'शम्भु' भी हैं यानी वे परमानन्द के स्रोत हैं, सुखदाता और आनन्दधाम हैं।

सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह है कि भगवान शिव परमात्मा हैं, आनन्दमय चिति हैं जो सम्पूर्ण सृष्टि का मूल तत्त्व है—सबकी आत्मा है, सबका हृदय है। इसका सर्वोत्कृष्ट उदाहरण है, शिवलिंग जो अधिकांश शिव-मन्दिरों के गर्भगृह में स्थित, भगवान शिव का प्रतिमास्वरूप चिह्न है। इसकी लम्बवत् खड़ी पिण्डी और आधाररूप वेदी जिसे 'पीठ' कहते हैं, शिव और शक्ति तत्त्वों के द्योतक हैं, ये इस बात के द्योतक हैं कि निराकार परब्रह्म अपनी सर्वव्यापिनी शक्ति से अभिन्न है।

भगवान शिव का एक और स्वरूप है जिसकी व्यापक तौर पर पूजा की जाती है, और वह है उनका 'नटराज' [नृत्य के देवता] स्वरूप—यह उनका उत्कृष्ट व पारम्परिक स्वरूप है जिसकी संरचना व पूजा-अर्चना दक्षिण भारत के चिदम्बरम नामक स्थान में हुई थी। यह भगवान शिव का सर्वाधिक प्रसिद्ध दृश्यात्मक स्वरूप है, और चूँकि यह उनके गुणों को अत्यन्त स्पष्टता से दर्शाता है, इसलिए भगवान शिव को जानने का यह एक अत्युत्तम माध्यम है।

अतीव सौन्दर्य से, लयात्मक रूप में व सन्तुलन के साथ, भगवान शिव नटराज की शक्तिपूरित मूर्ति न्यूयॉर्क स्थित श्री मुक्तानन्द आश्रम में आत्मनिधि व अनुग्रह के गलियारों के मुख्य द्वार के सामने स्थित है और यह भारत के गणेशपुरी स्थित सिद्धयोग आश्रम, गुरुदेव सिद्धपीठ के उद्यानों में भी प्रतिष्ठापित है। कला द्वारा दैवी गतिविधियों को अभिव्यक्त करने वाले प्रतीकों में से, शायद यह स्वरूप उन गतिविधियों को सबसे सटीक रूप से दर्शाता है।

भगवान शिव नटराज के इस बहुआयामी व रहस्यपूर्ण स्वरूप को अकसर 'आनन्द ताण्डव' [आनन्द का नृत्य] कहा जाता है जिसके द्वारा भगवान विश्व का सृजन और विलय साथ-साथ, निरन्तर रूप से करते रहते हैं।

भगवान शिव के सभी स्वरूपों में सम्भवत: 'नटराज' स्वरूप उनके क्रियात्मक पहलुओं को पूर्णतया अभिव्यक्त करता है। इस विस्मयकारी स्वरूप का बारीकी से अवलोकन करने से हमें उनके रहस्यमय

स्वभाव की गहन समझ मिलेगी। और ऐसा करने से, हम यह भी समझ पाएँगे कि यह मूर्ति एक तरह से इस बात का वर्णन करती है कि हम वास्तव में कौन हैं।

भगवान शिव नटराज चिति के दिव्य विलास की अनन्त मुद्राओं के सूचक हैं। थिरकते हस्तकमलों व चरणों द्वारा, आगे-पीछे झूमते सिर और खुली हुई लम्बी जटाओं द्वारा भगवान शिव अपने पंचकृत्यों को प्रकट करते हैं : सृष्टि, स्थिति, संहार, विलय और अनुग्रह।

इस मूर्ति में, भगवान शिव एक बौने दानव के ऊपर नृत्य करते हैं जिसे 'अपस्मार पुरुष' कहा जाता है और जो अज्ञान व विस्मृति का प्रतीक है। अज्ञान के पाश से मुक्त, शिव सदा स्वतन्त्र व आनन्दमय हैं। अपने ऊपर वाले दाहिने हाथ में वे डमरू धारण किए हुए हैं जिसे बजाने से वे मातृका-शक्ति के स्पन्दनों को उत्पन्न करते हैं यानी वे उन ध्वनिस्पन्दनों को उत्पन्न करते हैं जो संस्कृत की वर्णमाला द्वारा दर्शाए जाते हैं और जो सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड का रूप धारण करते हैं। यह भगवान शिव का प्रथम कृत्य है, 'सृष्टि का नृत्य'।

उनके डमरू से उत्पन्न ये स्पन्दन वही स्पन्दन हैं जिनकी अनुभूति प्राचीन काल के ऋषि-मुनियों को गहन ध्यान की अवस्था में हुई और तत्पश्चात् उन्होंने इन स्पन्दनों को वर्णों या शब्दों के रूप में [उच्चार-रूप में] व्यक्त किया। ये शब्दरूपी अभिव्यक्तियाँ फिर पावन वेदों की ऋचाएँ व शैवागमरूपी शास्त्रों के श्लोक बनीं।

भगवान शिव का नीचे वाला दाहिना हाथ अभयमुद्रा में है। इस मुद्रा द्वारा भगवान शिव अभय प्रदान करते हैं और इस प्रकट जगत को बनाए रखने हेतु [इसकी स्थिति हेतु] अपने आशीष प्रदान करते हैं। यह भगवान शिव का दूसरा कृत्य है, 'स्थिति का नृत्य'।

अपने ऊपर वाले बाएँ हाथ में वे अग्निशिखा को धारण किए हुए हैं जिसके द्वारा जगत-चक्र के अन्त में समस्त जगत का भक्षण अर्थात् संहार हो जाता है। यह भगवान शिव का तीसरा कृत्य है, 'संहार का नृत्य'।

अपनी नीचे वाली बाईं भुजा को अपने हृदय के सामने से उठाकर, वे हृदय को हमारे बोध से छिपाकर रखते हैं। यद्यपि विशुद्ध चिति के रूप में शिव इस विश्व को प्रकट करते हैं, तथापि हमारे लिए वे इसी में छिपे रहते हैं। यह भगवान शिव का चौथा कृत्य है, 'विलय का नृत्य'।

भगवान शिव अपने नीचे वाले बाएँ हाथ से, अपने एक उठे हुए पाँव की ओर संकेत कर रहे हैं। यह अनुग्रह के प्रवाह को दर्शाता है जो हमें अपनी सीमित समझ से मुक्त कर देता है क्योंकि जिस प्रकार भगवान शिव अपनी विलय की शक्ति द्वारा विलय का कृत्य करते हैं, उसी प्रकार वे अपनी उस शक्ति को जाग्रत भी करते हैं जिससे वे परम सत्य के साररूप में स्वयं को प्रकट करते हैं। यह भगवान शिव

का पाँचवाँ और अन्तिम कृत्य है—आत्मज्ञानी श्रीसद्गुरु इस कृत्य के मूर्तरूप हैं जो हमें भवबन्धन से मुक्त कर हमारे अन्दर इस बोध को जगाते हैं कि परम चेतना यानी आत्मा हमारा सच्चा स्वरूप है। यह पाँचवाँ कृत्य, भगवान शिव का 'अनुग्रह का नृत्य' है।

अपनी इन मुद्राओं द्वारा, वैभवशाली भगवान शिव नटराज का यह स्वरूप सृष्टि के मूल स्रोत को—परम चेतना को, महान सर्वात्मा को बहुत ही गरिमापूर्ण ढंग से दर्शाता है। नटराज हमारे सम्मुख किस रहस्य को उद्घाटित कर रहे हैं? भगवान शिव हमसे क्या कह रहे हैं? वे आध्यात्मिक पथ के साधकों को कौन-सा सन्देश देना चाहते हैं?

भगवान शिव नटराज को और नज़दीक से देखने पर हम पाते हैं कि भगवान शिव के मुख पर अखण्डित शान्ति व स्थिरता के भाव हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि उनके नेत्र पूर्णतया अन्तर्मुखी हैं, मानो वे अन्तरतम आत्मा की निस्तब्धता का चिन्तन कर रहे हों। उनके मुखमण्डल के भाव प्रशान्त हैं, कोई मुद्रा या गतिशीलता नहीं है और एक सौम्य सन्तोषभरी मुस्कान उनके मुखमण्डल पर खेल रही है। एक ही समय पर, वे अपनी भावातीत अन्तर-स्थिति को निहार रहे होते हैं और साथ ही वे अपनी क्रियात्मिका शक्ति को ब्रह्माण्ड के रूप में बाहर प्रसरित होता हुआ भी देख रहे होते हैं। उनकी यह भावाभिव्यक्ति उस स्थिरता को प्रतिबिम्बित करती है जिसमें से हरेक चीज़ उदित होती है और हमें स्वर्णिम प्रकाश के उस अचल स्तम्भ का स्मरण कराती है जिसे शिवलिंग के रूप में दर्शाया जाता है और जिसमें से शक्ति समस्त सृष्टि का सृजन करती है।

नटराज स्वरूप में भगवान शिव यह पहचानने के लिए हमें निर्देशित करते हैं कि ब्रह्माण्ड का अखिल नृत्य, जो भगवान की सत्ता से उदित होता है, वह पूर्ण स्थिरता के, पूर्ण निश्चलता के बिन्दु से उन्मीलित होता है। भगवान शिव के मुखमण्डल पर छाई निस्तब्धता उनकी अन्तरतम सत्ता के मौन व प्रशान्ति को दर्शाती है। चिति के इसी निस्तब्ध बिन्दु से, स्पन्दायमान होकर यह सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड उनके सभी ओर प्रकट होता है।

यदि यह बात परस्पर विरोधाभासी लगती है—कि सृजन का यह नृत्य पूर्ण निस्तब्धता से उदित होता है—तो हाँ, ऐसा ही है। भगवान शिव परस्पर विरोधाभासों के मूर्तरूप हैं। वे निराकार हैं, तथापि उनका साकार रूप भी है। वे सृजनकर्ता और विलयकर्ता, दोनों हैं। वे छिपाते है और उसी समय प्रकट भी करते हैं। अपने ब्रह्माण्डीय नृत्य में, भगवान शिव परमशून्य की स्थिरता हैं, और इसी स्थिरता से उभरने वाली क्रियात्मक गतिशीलता उनकी शक्ति है।

जब हम ब्रह्माण्डीय नर्तक के रूप में भगवान शिव की कल्पना करते हैं तब हो सकता है, हम अपने आप से ये प्रश्न पूछे : उनके इस ब्रह्माण्डीय नृत्य के साथ हमारा क्या सम्बन्ध है, हम इससे किस प्रकार जुड़े हैं? हममें से हरेक व्यक्ति और यह ब्रह्माण्डीय नृत्य किस तरह एक-समान हैं?

क्षणभर के लिए अपनी जीवन-यात्रा के बारे में विचार करें, बचपन से लेकर इस वर्तमान क्षण तक। आपने जो भी परिवर्तन अनुभव किए हैं, उनमें वह क्या है जो सतत बना रहा, जो नहीं बदला? आपकी सत्ता के गहरे अन्तरतम में, कुछ ऐसा है जो आपके सम्पूर्ण क्षणभंगुर और परिवर्तनशील सांसारिक जीवन का द्रष्टा रहा है। आपके अन्तर का वह अपरिवर्तनशील पहलू आपका शुद्ध बोध है। यह आपकी सत्ता का गहनतम केन्द्र है; अपनी पहचान के बारे में आपने जो धारणाओं की परतें बना ली हैं, यह उन सबसे परे है। सद्‌गुरु बताते हैं कि यह बोध ही आपकी सच्ची पहचान है— यानी आत्मा। निस्तब्धता के इस बिन्दु से जो कि आत्मा है, यह नृत्य उदित होता है और संसार के आपके अनुभव का रूप ले लेता है।

दक्षिण भारत के शैवग्रन्थ तिरुमन्तिरम् में आठवीं सदी के तामिल सन्त तिरुमूलर गाते हैं :

मैंने दिव्य नृत्य को खोजा और अपने अन्दर पाया,
पाँव झनकती पायलों से अलंकृत थे,
मुख से निकलता संगीत और थिरकते-झूमते हाथ-पाँव,
अरे, मेरे दुःख-दर्द कैसे दूर हो गए।[१]

सन्त तिरुमूलर हमें बता रहे हैं कि यह पावन नृत्य हमारे भीतर होता है। हम ही भगवान शिव का ब्रह्माण्डीय नृत्य हैं—अपने संसार की सृष्टि, स्थिति व संहार हम स्वयं ही करते हैं। अद्वैत काश्मीर शैवदर्शन का उपदेश देने वाले ऋषि-मुनि इसे ‘स्वतन्त्र’ कहते हैं—संस्कृत उपसर्ग ‘स्व’ का अर्थ है, ‘स्वयं’ और मूल धातु ‘तन्’ का अर्थ है ‘फैलाना,’ ‘प्रसरित करना,’ या ‘बुनना।’ हमारा संसार ‘स्वतन्त्र’ है जिसकी रचना चिति की निर्बाधित स्वतन्त्र इच्छा से हुई है। स्वतन्त्रता यानी भगवान शिव का यह नृत्य हमारे हृदय के केन्द्र में निहित स्थिरता से स्पन्दायमान होकर प्रकटरूप धारण करता है। इस पूर्ण स्वतन्त्रता में ‘शिवोऽहम्’ का, ‘मैं शिव हूँ’ का अनुभव निहित है।

जब हम भगवान शिव के मनोहर मुखमण्डल पर केन्द्रण करते हैं तो उनकी कृपापूर्ण दृष्टि हमारे मन को शान्त करने लगती है . . . हमें अपने विचारों से बाहर खींचकर उनके परे ले जाती है, हमारे मानसिक क्रियाकलाप के परे हमारे हृदय की गहराई में उस स्थिर बिन्दु में ले जाती है। यहाँ हमें पूर्ण विश्रान्ति मिलती है। पूर्ण स्वतन्त्रता। सुकून भरी प्रशान्ति।

यही वह प्रशान्ति का स्थान है, हमारे हृदय में स्थिरता का स्थान, जिसे देखने और अंगीकार करने के लिए महान ऋषि-मुनि हमें आमन्त्रित करते हैं।

भगवान शिव की पहचान को उजागर करने वाले अनेकानेक दिव्य गुणों में से एक जो ऋषि-मुनियों के लिए अत्यन्त आदरणीय है, वह है मन्त्ररूप में भगवान शिव। ‘ॐ नमः शिवाय’ मन्त्र का हरेक वर्ण

शिव की शक्ति की ही अभिव्यक्ति है। निस्सन्देह, सन्त तिरुमूलर हमारे समक्ष यह उजागर करते हैं कि 'नमः शिवाय' के पाँचों वर्णों में भगवान शिव के ब्रह्माण्डीय नृत्य के स्वर प्रतिबिम्बित होते हैं। सृष्टि का डमरूनाद, वर्ण 'शि' है। स्थिति की अभयमुद्रा, वर्ण 'वा' है। संहार की अग्नि 'य' है। हमारी सीमितताओं का नाश करने वाला पाँव 'न' है। कृपा का उठा हुआ पाँव वर्ण 'म' है।
ॐ नमः शिवाय. . .

शिव नटराज, मन्त्र 'ॐ नमः शिवाय' हैं।

मन्त्र दोहराते समय, स्वयं को मन्त्र के प्रति समर्पित कर दें, उसके सुमधुर स्वरों में स्वयं को लीन हो जाने दें—भगवान शिव के 'आनन्द ताण्डव' नृत्य में प्रवेश करें।

मेरी सदिच्छा है कि भगवान शिव का ब्रह्माण्डीय नृत्य सतत आपको यह याद दिलाता रहे कि भगवान की कृपादृष्टि सदैव आप पर है, कि भगवान शिव का मनोहर मुखमण्डल आपके अन्तर में सदैव है व उसकी तेजोमय किरणें आपके अपने हृदय के स्थिर बिन्दु से बाहर की ओर प्रसरित हो रही हैं।

© २०२२ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।

[१] तिरुमन्तिरम्, २६७०; अनुवाद : पॉल यनार, *The Home of Dancing Śivan: The Traditions of the Hindu Temple in Citamparam* [न्यूयॉर्क : आक्स्फ़ॉर्ड यू. प्रेस, १९९५], पृ १९३।